दिव्य आर्य पथ प्रदर्शिका

(आर्य धर्म सिद्धान्त और आदर्श का संक्षिप्त बोध-पुस्तिका)

जन्म तिथि
1920



मृत्यु तिथि
16 अगस्त
2002

प्रातः स्मरणीय स्व० (श्रीमती) किशोरी देवी चोपड़ा धर्मपत्नी स्व० श्री पुरुषोत्तमदास चोपड़ा सेवानिवृत्त-पुलिस मुख्यालय, इलाहाबाद जिनकी पावन स्मृति में उनके सुपुत्र श्री सुरेश चन्द्र चोपड़ा ने यह पुस्तिका अपने सुदान से प्रकाशित किया।

रचयिता

धर्म भूषण मदन मोहन दिव्य, याज्ञिक संस्कार मर्मज्ञ

मूल्य - श्रद्धा - सहयोग

प्राक्कथन

यह लघु-पुस्तिका आर्य समाज में नये प्रविष्ट होने वाले स्त्री-पुरुषों के लिये आर्य-धर्म और आर्य-सिद्धान्तों का बोध कराने में प्रमुख रूप से सहायिका एवं आर्येतर स्त्री-पुरुषों को आर्यों के धर्म-सिद्धान्तों के विषय में प्रथम दृष्टया संक्षिप्त ज्ञान कराने में परम सहायिका है। इस पुस्तिका लिखने का यही एक मात्र उद्देश्य है। इसके द्वारा प्रत्येक आर्य व्यक्तिगत रूप से और प्रत्येक आर्य सामने आर्यधर्मेतर स्त्री-पुरुषों में सामूहिक धर्म प्रचार रूपेण अधिकाधिक प्रचार प्रसार कर सकें। इससे साधारण जनता जिसमें हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख जैन बौद्ध ईसाई आदि सभी सम्मिलित हैं। आर्य और आर्य धर्म के बारे में जो भ्रांतियाँ रखती हैं वह समस्त भ्रान्तियाँ दूर होने पर परस्पर एक दूसरे के निकट आयेंगी ऐसा लेखक का विश्वास है।

भगवान करे, इस लघु पुस्तिका को पढ़कर आर्य धर्म के बारे में सकल भ्रान्तियाँ दूर हों। सब एक दूसरे के निकट आये और लेखक का अभिप्राय सुसिद्ध एवं पूर्ण हो। इत्यलम।

विनयामत

मदन मोहन दिव्य, धर्मभूषण

***

सम्मति

इस लघु पुस्तिका में दो मित्रों के सम्वाद के माध्यम आर्य-धर्म-सिद्धान्त और आदर्शों का सरल, सुबोध शब्दों में बोध कराने का सुप्रयास किया गया है। इससे सर्वसाधारण में आर्य धर्म के सम्बन्ध में सुबोध होने से अनेक भ्रान्तियाँ दूर होगी। लेखक का प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। पुस्तक पठनीय है। जन साधारण में इसका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

सावित्री देवी शर्मा
आर्योपदेशिका, बरेली

***

विनय और प्रकाश नये-नये एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। वे एक दूसरे को समझने के लिये समुत्सुक हैं। विनय प्रकाश के बारे में, उसके कर्म-धर्म के विषय में सब कुछ जान लेना चाहता है। प्रश्नोत्तर रूप में यह वार्ता आगे बढ़ती है-

विनय- नमस्ते, महाशय!

प्रकाश- नमस्ते, भाई जी!

विनय- भाई जी, जरा अपना परिचय तो दीजिये।

प्रकाश- आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।

ओइम् हमारा पूज्य है सत्य हमारा कर्म।। अर्थात् भाई ने मेरा नाम प्रकाश आर्य है। सत्य सनातन वेद पर आधारित वैदिक धर्म हमारा धर्म है। सत चित् आनन्द स्वरूप निराकार अजन्मा, सृष्टिकर्ता, धर्ता और हर्ता परमेश्वर जिसका नाम 'ओइम्' है हमारा पूज्य देव है। मन, वाणी और कर्म से सत्याचरण करना हमारा कर्म है।

विनय- भैया प्रकाश तनिक और स्पष्ट कीजिये 'आर्य' के विषय में।

प्रकाश-आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ। श्रेष्ठ स्वभाव, सदाचारी, परोपकारी, धर्मात्मा, ईश्वर पुत्र, गतिशील, सत्य विद्यादि लक्षणयुक्त स्त्री-पुरुष जो सदा से इस देश में रहते आये हैं वे सब आर्य हैं। यह आर्य शब्द गुण परक और इतिहास-परक दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुये हैं।

विनय- भाई जी, इतिहास में हम पढ़ते आये हैं कि आर्य बाहर से आये। द्रविणों से युद्ध हुआ।

प्रकाश- नहीं, नहीं, इस देश का प्राचीनतम नाम आर्यवर्त है अर्थात् आर्यों का निवास स्थान। कर्मकाण्ड के पूर्व पढ़े जाने वाले सकल मंत्र में भी इसका उल्लेख है जो आदि सृष्टि से आज तक प्रयोग होता आया है। द्रविण आर्य से इत्तर नहीं के ब्राह्मण कुलों में से एक है। स्वामी शंकराचार्य भी इन्हीं कुलों में से थे।

अतएव, 'आर्य बाहर से आये' यह कहना सर्वथा गलत है। संसार के पुस्तकालय के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ 'वेद' में भी आर्य शब्द सद्गुण अर्थ में बारम्बार प्रयोग हुआ है।

विनय- और अब अपने धर्म वेद के विषय में कुछ बतायें।

प्रकाश- वेद का अर्थ है ज्ञान। वह ज्ञान जो सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु आदित्य और अंगिरा तत्कालीन श्रेष्ठ ऋषियों के हृदयों में परमेश्वर द्वारा प्रकाशित किये गये, ताकि इसमें विहित रीति नीति के अनुसार आचरण व्यवहार कर मनुष्य सुखानन्द की प्राप्ति करे। वेद को श्रुति भी कहते हैं क्योंकि सुदीर्घकाल तक ऋषियों द्वारा इसे सुन सुनाकर परम्परा से इसका प्रचार होता रहा। बहुत काल पश्चात् भूलने की स्थिति में इसे पुस्तक रूप में लिपिबद्ध किया गया। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

विनय- सुनते हैं वेद चार हैं। ऋक्, यजु, साम और अथर्व। मुख्य तीन-ज्ञान, कर्म, उपासना विषयों का प्रतिपादन है अर्थात् ज्ञान काण्ड, कर्म काण्ड और उपासना काण्ड, काण्ड का अर्थ विषय है।

विनय- तनिक वेद विषय को और स्पष्ट कीजिये (ऋच्यते स्तूतयेऽनया इति ऋक्)

प्रकाश- ऋक्-जिसके द्वारा प्रत्येक पदार्थ का गुण-दोष विवेचन किया जाये उसी का नाम ऋक् या ऋचा है। यह ऋग्वेद के नाम से जाना जाता है। इसमें 10 मंडल, 85 अनुवाक् 1028 सूत्र एवं 10.552 मन्त्र हैं।

यजु-(यजुर्यजते)-जिनके द्वारा यज्ञ, यागादि किये और परस्पर व्यवहार बोध हो उसी का नाम यजुर्वेद ख्यात है। इसमें 40 अध्यायों में कुल 1175 मन्त्र हैं।

सामन्-गान (गीतिपु समाख्या) जिनके द्वारा विशिष्ठ गान की पद्वति बांध हो उसी का नाम सामवेद है। यह उत्तरार्चिक और पूर्वचिक दो भागों में विभक्त है। इनमें कुल 1875 मन्त्र हैं। 1771 ऋक् के और 104 स्वयं साम के हैं।

अथर्ववेद-जिनमें यज्ञ और यज्ञेतर नाना प्रकार के पौष्टिक एवं अभिमद संबंधी कर्मों का सम्पादन एवं अनेक भौतिक शिल्प विद्याओं का समावेश है वह अथर्ववेद के नाम से जाना जाता है। इसमें 20 काण्ड 730 सूत्र और 5187 मन्त्र हैं।

विनय- आपने हमें वेद से परिचित कराया, इसके लिए धन्यवाद। अब हमें 'धर्म' के बारे में बोध करायें। धर्म क्या है और इसका वेद से क्या सम्बन्ध है, स्पष्ट करें।

प्रकाश- पक्षपात रहित, न्यायाचरण सत्यभाषणादियुक्त, ईश्वराज्ञा का यथावत पालन और वेदानुकूल होके सर्वहित करना है तथा प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये ग्राह्य और मानने योग्य है, उसी का नाम धर्म है। वेदोक्त और वेदानुकूल आचरण और व्यवहार ही हमारा धर्म है। यही 'वेद हमारा धर्म' कहने का हमारा अलय है।

विनय- आपने कहा 'ओ हमारा देव है। अब आप अपने इस देव के बारे में हमें कुछ बतायें।

प्रकाश- देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्योतनाद् वा जो हमें कुछ न कुछ देते, प्रकाशित करते हैं व बोध और रक्षण करते हैं देव कहलाते हैं। ये चेतन और जड़ दो प्रकार के हैं प्रथम हम जड़ देवों के विषय में जान लें ये 33 कोटि (श्रेणी) में विभक्त हैं और सब निरन्तर अपने कार्य करते हुये।

8 वसु-जो सब प्रजा और पदार्थ परोपकार करते हैं-के आश्रय और आधार है यथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र।

11 रुद्र-शरीर इनसे संचालित होता है। शरीर छोड़ते समय रुलाते हैं यथा प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाम, कर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय और जीवात्मा।

12 आदित्य-साल के 12 माह ये ऋतु अनुसार फल फूल औषधि आदि देते और सबकी आयु ले जाते हैं।

प्रजापति-यज्ञ-जल वायु की शुद्धि, रोग की निवृत्ति, विद्वानों का सत्कार नाना शिल्प विद्या से प्रजा का पालन करता है।

इन्द्र-बिजली-(आकाशीय जलीय आदि विद्युत) परम का हेतु हैं।

विनय- हाँ, अब चेतन देवों की कथा कहिये।

प्रकाश- चेतन देवों में प्रथम मूर्तिमान देवों की बात सुनिये। प्रथम माता मूर्तिमती पूजनीय देवग, दूसरा पिता, मूर्तिमान सत्कर्त्तव्य देव तीसरा आचार्य मूतिरा विद्या-दाता देवता चौथा विद्वान धार्मिक

सबकी उन्नति चाहने वाला सत्योपदेश कर्त्ता अतिथि मूर्तमान देव तथा पवित्र स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए अपनी पत्नी पृजनीय ये 5 मृतिमान प्रत्यक्ष देव हैं जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्य शिक्षा विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। इन्हीं पंचदेवों की पृजा का नाम पंचायतन पृजा है।

इस 33 जड़ और 5 मृतिमान देवों का भी देव-महादेव सर्वोपरि ज्ञानियों के लिये प्रत्यक्ष मृतिमान और अज्ञानियों के लिये अप्रत्यक्ष मृतिमान परमदेव ओइम् जिसक सर्वोत्तम मुख्य नाम है वही हमारा पृज्य-उपासनीय देव है।

ओइम् का अर्थ है-अवतीत्योम्-सृष्टि कर्त्त पालन कर्त्ता सृष्टि संहर्त्ता और सबका सब समय रक्षक।

विनय- यह परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम क्यों हैं?

प्रकाश- इस एक शब्द में परमात्मा के समस्त गुण-कर्म-स्वप्न स्पष्ट हो जाते हैं। इसीलिये यह परमात्मा का सर्वोत्तम नाम कहा गया है। इसका ही जप, इसका ही ग्रन्थारम्भ समाप्ति में प्रयोग, वेद-पाठ करने के पूर्व मन्त्र में ओम और पाठ के अन्त में ओम् के उच्चारण के साथ पाठ की समाप्ति और कर्म काण्ड में प्रत्येक क्रिया के आरम्भ में ओं का प्रयोग आवश्यक और अनिवार्य एवं शास्त्र सम्मत माना गया है। अन्य नाम का प्रयोग निषेद्ध है।

विनय- परमेश्वर के अनन्त नाम क्यों हैं?

प्रकाश- परमेश्वर के अनन्त गुण-कर्म-स्वाभाव होने से अनेक अनेक नाम हैं, जो परमेश्वर के एक न एक गुण विशेष का बोध कराते हैं। यथा- सब जगत के बनाने से ब्रह्मा, सर्वव्यापक होने से, विष्णु, दुष्टों को दण्ड देके रुलाने से रुद्र, स्व प्रकाश स्वरूप होने से अग्नि सबका पालन करने से प्रजापति प्रजा के समूह का पति होने से गणेश सब जगत के बनाने में समर्थ होने से शक्ति, सबको देखने एवं सबके अगल-अलग तथा विविध विज्ञान अर्थात् शब्द अर्थ रूप दे चिह्नित करने से लक्ष्मी सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत होने से परमेश्वर का नाम सरस्वती है।

विनय- आपने कहा था 'सत्य हमारा कार्य' सत्य से क्या है?

प्रकाश- इस सत्य से आशय है- सत्याचरण अर्थात सब सत्यों का पालन करना ही एक आर्य के कर्म हैं। इसे और भी स्पष्ट रूप में समझिए।

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ (इस सत्य) विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल सत्य स्वरूप ईश्वर की ही उपासना करना। उसके स्थान पर अन्य किसी को न मानना।
2. सब सत्य विधाओं की पुस्तक वेद ही है ऐसा जान व मानकर वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना।
3. सत्य को ग्रहण करना और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत (तैयार) रहना।
4. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचारकर करना इन सत्यों का आचरण जिनके कर्म में है वही आर्य है।

विनय- एक आर्य की दिनचर्या-नित्य कर्म क्या है? तनिक सविस्तार बतायें।

प्रकाश- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिदेववैश्व यज्ञ इन पाँच महायज्ञों का सब काल करना ही एक आर्य के प्रतिदिन के कर्म हैं।

विनय- इनसे लाभ ही क्या हैं जो इन्हें प्रतिदिवस किया जाय?

प्रकाश- लाभ हैं। ब्रह्मयज्ञ करने से विद्या, शिक्षा धर्म सभ्यता आदि शुभ गुणों की वृद्धि, देवयज्ञ करने से वायु, वृष्टि जल की शुद्धि होकर इनसे संसार को सुख प्राप्त होना, पितृयज्ञ से माता-पिता आदि बड़ों से ज्ञान वृद्धि, सत्यासत्य विवेक और कृतज्ञ बनना, बलि वैश्व देव यज्ञ से पाकशालास्थ वायु की शुद्धि व अदृष्टों जीवों की हत्या का प्रत्युपकाएं देना और अतिथि यज्ञ से सत्योपदेश, सत्य विज्ञान की प्राप्ति तथा पाखण्डादि की हानि होती है। इसलिये इन्हें नित्य करने का विधान किया गया है।

विनय- अब उनके विषय में संक्षेप में कहें। ब्रह्मयज्ञ क्या है?

प्रकाश- प्रभु की वाणी-वेद का स्वाध्याय-पढ़ना-लिखना और सन्ध्योपासन अर्थात रात और दिन के संयोग समय उषा एवं गोधूलि बेला में

परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना भली भाँति करना ब्रह्मयज्ञ यज्ञ है।

विनय- और देव यज्ञ क्या है?

प्रकाश- शिल्प अर्थात् रसायन पदार्थ विद्या का यथायोग्य उद्योग तथा वायु वृष्टि जल औषधि की पवित्रता हेतु अग्निहोत्र का सब जीवों को सुख पहुँचाना और विद्वानों की सेवा सङ्ग. करना ही देवयज्ञ है। इसे भी दोनों काल रात-दिन की सन्धि बेला में करना चाहिये।

विनय- अब पितृयज्ञ विषय में बताइये

प्रकाश- जीवित माता-पिता, दादा-बाबा, दादी-नानी आदि पितरों का श्राद्ध करना अर्थात् श्रद्धा-सत्कार पूर्वक सेवा करना तथा जिस जिस कार्य से उनकी तृप्ति हो अर्थात् वे प्रसन्न हों वह तर्पण करना ही पितृयज्ञ कहलाता है। मृतकों का नहीं करना।

विनय- अतिथि यज्ञ क्या है?

प्रकाश- जिनकी जाने और आने में कोई निश्चित तिथि न हो तथा जो पूर्ण विद्वान् परोपकारी, जितेन्द्रिय, धार्मिक, सत्यवादी, छल-कपट रहित होकर सर्वत्र भ्रमण करके उपदेश से सब जीवों का उपकार करता है ऐसे अतिथि की सेवा-सत्कार का नाम ही अतिथि यज्ञ कहलाता है। इसके विपरीत लम्पट भिखारियों का वाणी सम्मान नहीं करना चाहिये।

विनय- अब नृयज्ञ या बलिवैश्व देव यज्ञ के विषय में कहें

प्रकाश- रसोई में जो कुछ भोजनार्थ बना हो उसमें से खट्टा-नमकीन, कसैल-तिल पदार्थ को छोड़कर धृत-मिष्टयुक्त अन्न ले उसको दिव्य गुणों के अर्थ पाकाग्नि में होम करना तथा कुत्तों-कंगाल, कुष्ठ रोगियों कौये आदि पक्षियों और चींटी आदि कृतियों के लिये छः भाग कर बाँट के दे उन्हें प्रसन्न रखना ही नृयज्ञ है।

विनय- अब मैं ईश्वर के विषय में जानना चाहूँगा। कृपया उसका स्वरूप क्या है।

प्रकाश- ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं। वह चेतन मात्र वस्तु है। वह एक, अद्वितीय सर्वशक्तिमान. निराकार,

सर्वत्र व्यापक अनादि और अनन्त आदि सत्य गुण वाला है। उसका स्वभाव अजर-अमर अभय नित्य पवित्र, अनुपम सर्वाधार अविनाशी सर्वान्तर्यामी ज्ञानी आनन्दी शुद्ध न्यायकारी दयालु अजन्मादि है। उसका कर्म जगत की उत्पत्ति पालन और विनाश करना तथा सब जीव को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है।

विनय- परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये या नहीं और करनी चाहिये तो कैसे?

प्रकाश- करनी चाहिये। स्तुति से ईश्वर में प्रीति उसके गुण-कर्म-स्वभाव से अपने गुण-कर्म-स्वभाव का सुधरना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाध्य का मिलाना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होता है, इसलिये स्तुत्यादि अवश्य करनी चाहिये। उसके करने के प्रकार अन्य ही हैं।

विनय- कृपया इसको स्पष्ट कीजिये।

प्रकाश- ईश्वर कुछ गुणों से रहित है और कुछ गुणों से रहित भी है। जैसे वह दया गुण से सहित है और पाप गुण से रहित है। अर्थात् ईश्वर सगुण-निर्गुण-दोनों है।

जब गुणों से सहित मानकर ईश्वर की उपासनादि की जाती तो यह उसकी सगुणों पासना कही जाती है यथा उसे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, शुद्ध, नित्य, आनन्द, सर्वव्यापक, एक सनातन सर्वकर्त्ता, सर्वाधार, सर्वस्वामी, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, मंगलमय सर्वानन्दप्रद, सर्वपिता-पालक, सब जगत का रचने वाला, न्यायकारी दयालुता आदि सत्य गुणों से युक्त जानकर ध्यान करना। यह उसकी सगुणों पासना होगी।

विनय-और निर्गुणोपासना क्या है?

प्रकाश- जब गुणों से रहित मानकर ईश्वर की उपासनादि की जाती है तो वह उसकी निर्गुणोपासना होगी यथा उसे निराकार निरअवयव, अजन्मा अनादि, अनुपम, अखण्ड अविनाशी अजर, अमर, अभयादि जड़ के रोग द्वेष क्षुधा तृषादि जीव के ढंग से रहित जानकर ध्यान करना। यह उसकी निर्गुणोपासना होगी।

विनय- सगुण से क्या परमेश्वर के साकार होने से कोई सम्बन्ध नहीं है?

प्रकाश- कदापि संबंध नहीं। ईश्वर सर्वत्र सब काल व्यापक, एक और निराकार ही है। साकार हो तो उसके नाक कान नेत्रादि अवयवों का बनाने वाला कोई दूसरा होना चाहिये। जो कहो कि स्वेच्छा से बना लिया तो भी यही सिद्ध हुआ कि शरीर बनने के पूर्व निराकार था। निराकार ही सब सूक्ष्यों को स्थूलाकार बना देता है।

विनय- क्या जीव ईश्वर का अंश नहीं और क्या दोनों एक नहीं।

प्रकाश- जीव और ईश्वर में अंशाअंशी भाव नहीं। अनादि ईश्वर से पृथक् जीव भी एक अनादि सत्ता है। जीव के लक्षण हैं इच्छा, द्वेष प्रयत्न और सुख-दु:ख। ईश्वर में इसका लवलेश नहीं। ईश्वर और जीव में कुछ समानता भी और कुछ अन्तर भी।

विनय- सभ्रांनता क्या है? और अन्तर क्या है?

प्रकाश- ईश्वर और जीवात्मा दोनों अनादि, दोनों चेतन, दोनों निराकार और ज्ञानवान है यह समानता है और अन्तर इस प्रकार है-

1. ईश्वर एक है-जीव असंख्य है।
2. ईश्वर सर्वज्ञ है-जीव अल्पज्ञ है।
3. ईश्वर सर्वव्यापक है-जीव एकदेशी है।
4. ईश्वर सर्वशक्तिमान है-जीव सर्वमत शक्तिवाला है।
5. ईश्वर को न साधन-उपकरण की जरूरत पड़ती है और न किसी सहायक की जीव को कर्म करने और उसके फल भोगने के लिये शरीर और साधन उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है और दूसरों की सहायता मांग।
6. ईश्वर एकरस अपरिवर्तन शील हैं कभी जन्म नहीं लेता जीव नित्य होते हुये भी कर्मानुसार शरीरों में आता-जाता है।
7. ईश्वर में राग द्वेषादि नहीं निर्विकारी है। जीव राग द्वेषादि सहित विकारी भी होता है।
8. ईश्वर सर्वानन्दी सर्वान्तर्यामी अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर अभय और सदा सर्वत्र है। जीव आनन्द से रहित अल्पज्ञ, उपमेय, सुधार स्वतंत्र कर्त्ता, भय अन्ययुक्त अपने अच्छे बुरे कर्म से कभी पवित्र कभी अपवित्र हो जाता है। अपने कर्म से कभी मुक्त और कभी बन्धन में आता है।

विनय- और 'प्रकृति' की क्या स्थिति है?

प्रकाश- प्रकृति अनादि किन्तु जड़ है। चेतनता रहित है। वस्तुतः प्रकृति

1. छोटे छोटे परमाणुओं का नाम है।
2. ये परमाणु जड़ हैं इनमें ज्ञान नहीं।
3. परमाणु अनादि और अनन्त है। न ये कभी उत्पन्न हुये न नष्ट हुये। सदा से हैं और सदा रहेंगे।
4. ईश्वर इन्हीं परमाणुओं को गति देकर सृष्टि रचना करता है।
5. जब परमाणु मिलते तो सृष्टि बनती जब अलग-अलग होते हैं तो सृष्टि क्या होती है। प्रकृति माया और ईश्वर मायापति है गति देने से। आर्य समाज ईश्वर जीव और प्रकृति तीनों को अनादि मानता है। ये सदा से हैं।

विनय- यह आर्य समाज क्या है? इसकी स्थापना कब और किसने की? विचारकर बताइये।

प्रकाश- आर्य का अर्थ श्रेष्ठ, सदाचारी, धर्मात्मा प्रगतिशील और समाज का अर्थ है संगठन। ऐसे श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्मा स्त्री पुरुषों के संगठन-आर्य समाज की स्थापना इसके प्रवर्त्तक आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 10 अप्रैल सन् 1875 ई0 में मुम्बई स्थित काकड़वाड़ी नगर में की थी।

विनय- प्रवर्त्तक महर्षि के विषय में मेरे मन में बहुत कुछ जानने की जिज्ञासा है कृपया, शान्त कीजिये।

प्रकाश- महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात प्रदेश के मोरवी राज्य में स्थित ग्राम निवासिनी माता यशोदा पिता करसनजी तिवाडी के घर में आज से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व हुआ था। पिता करसनजी शैव थे। उनकी प्रेरणा से एक शिवरात्री को व्रत-उपवास करते हुये एक चूहे को शिवपिडी पर चढ़ते अपवित्र करते देख इन्हें मूर्तिपूजा से अरुचि तथा सच्चे शिव बोध की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। अनन्तर बहन चाचा की मृत्यु देख संसार से वैराग्य भाव उत्पन्न होने पर 14 वर्ष की अल्पायु में माता-पिता का प्यार और धन धान्य से भरा घर-बार छोड़कर सन्यास लिया। अंततः व्याकरण के महासूर्य वेदज्ञ प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से शिक्षा

प्राप्त कर गुरु आदेश से वेदों के प्रचार में लग गये। सत्य के विरोधियों के षडयन्त्र के फलस्वरूप इन्हें विष दिया गया। जिससे 65 वर्ष की आयु में अजमेर नगर में इनकी मृत्यु हुई। देश की व्यवस्था देखकर कहा जाता है ऋषि ने अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए देश रियासतों में स्वतन्त्रता की ज्योति जगाई। फलस्वरूप नाना साहब पेशवा लक्ष्मीबाई तात्याटोपे द्वारा 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम छिड़ा। कहा जाता है छद्म रूप में उन्होंने संग्राम में भाग लिया। विफलता प्राप्त होने पर जन्मे अपना अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिया जिसमें पदे-पदेन राज्य स्वदेशी पर बल दिया गया है। तथा अपने शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश भेजा। जिन्होंने विदेशों में स्वाधीनता के लिये वृहचर्य किये और क्रान्तिकारियों के जनक बने। स्वामीजी ने अंध विश्वास मिथ्या ढकोसलों एवं मूर्तिपूजा के विरुद्ध प्रबल प्रचार किया। ईसाइयत और इस्लाम के खतरे से हिन्दू जाति को रुझान किया। शुद्धि आंदोलन का सूत्रपात किया। अछूतोद्धार की भाषा का उत्थान गुरुकुल शिक्षा पर बल देकर स्वधन संस्कृति, वेशभूषा एवं देश के प्रति प्रेम जागृत किया। वेदों ने भाष्य, स्त्री जाति का सम्मान दिलाने जैसे अनेक कार्य करते हुए अन्तिम क्षण तक सत्य और ईश्वर विश्वास पूर्वक कार्यरत रहे। आर्य समाज उनके लक्ष्य के पूर्ण करने में सदैव प्रयत्नशील रहा है और आगे भी रहेगा।

विनय- महर्षि द्वारा संस्थापित आर्य समाज के नियम उद्देश्य क्या हैं? कृपया बताइये।

प्रकाश- आर्य समाज के 90 सार्वभौम नियम हैं जिनमें संक्षिप्त रूप से इसकी मान्यतायें उद्देश्य एवं कार्यक्रम परिलक्षित होते हैं। इनमें प्रथम नियम हैं-

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

विनय- भैया! यहाँ आदि मूल से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

प्रकाश- ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों नित्य अनादि तत्व हैं। इसमें

ईश्वर जीव और प्रकृति का आधेय है। दोनों इस पर आश्रित हैं। प्रकृति जड़ है। यह अचेतन से प्रेरित होकर बनती बिगड़ती है।

अचेतन, जीव चेतन होते हुए भी सीमित और अल्प शक्ति वाला है। ईश्वर कर्मानुसार कभी बन्धन में आ जाता है कभी छूट जाता है। आदिमूल सर्वोत्तम एवं सर्वोत्कृष्ट कहा गया है क्योंकि यह सर्वदा जन्म-मरणादि से परे है।

विनय- और दूसरा नियम?

प्रकाश- आर्य समाज के दूसरे नियम में परमेश्वर का स्वरूप बताया गया है जो इस प्रकार है-

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

विनय- अब तीसरा नियम है- वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। यहाँ परम धर्म से तात्पर्य है- मुख्य कर्त्तव्य कर्म।

विनय- और चौथा नियम क्या है?

प्रकाश- सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए यह इसका चौथा निमय है।

विनय- केवल सत्य को जान ले, इसमें क्या हानि होगी?

प्रकाश- दोनों को जानना चाहिए क्योंकि सत्य को जान लेने से मात्र उसमें प्रेम होता है किन्तु असत्य को जानने से असतय वस्तु के प्रतिपूर्ण घृणा उत्पन्न होकर सत्य में अत्यन्त प्रीति और दृढ़ता हो जाती है। इसलिए दोनों का ज्ञान परमावश्यक है।

विनय- और छठा नियम क्या है?

प्रकाश- छठा नियम इसके मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करता है वह यह है- ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

विनय- नियम में उपकार करने का क्रम यही क्यों रखा?

प्रकाश- स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। जो अपने शरीर से

ही दुःखी है वह आत्मा परमात्मा के विषय में क्या सोच सकेगा। जो स्वयं शरीर से दुखी, आत्मा परमात्मा के विषय में

जिसे अवकाश नहीं वह समाज में अपनी और समाज की उन्नति के लिए क्या कर-धर सकेगा। इससे यही क्रम ठेक है।

विनय- कृपया सातवें नियम का उल्लेख करें।

प्रकाश- सातवाँ नियम है- सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य वर्तना चाहिए।

विनय- केवल धर्मानुसार ही लिखना ही पर्याप्त था फिर अन्य बातें लिखने का अर्थ क्या हुआ?

प्रकाश- शत्रु हो या मित्र सबसे अपनी ओर से प्रेमभाव रखना चाहिए, द्वेष नहीं, पश्चात जो धर्म के अनुसार कर्त्तव्य कर्म हो वैसा करना चाहिए अर्थात् बड़ों के प्रति आदर भाव और छोटों के प्रति स्नेह। अन्त में यही उचित व्यवहार उचित है कि जैसे को तैसा। शठ से शठता और सज्जन से सज्जनता।

विनय- आर्य समाज का आठवाँ नियम क्या है?

प्रकाश- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

प्रकाश- जिससे ईश्वर से लेकर पृथ्वी पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथा योग्य उपकार लेना होता है इसका नाम विद्या और जो इससे विपरीत है भ्रम और अन्धकार रूप है उसको अविद्या कहते हैं।

विनय- नवाँ नियम?

प्रकाश- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

विनय- अन्तिम दसवाँ नियम क्या है?

प्रकाश- सब मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहे।

विनय- परतन्त्र रहना तो हर हालत में ठीक नहीं, फिर ऐसा क्यों रखा?

प्रकाश- समाज में भेड़ तन्त्र न हो अपितु सब मिलकर जो सबके हित के लिए हितैषी नियम निश्चित किये गये हैं उसका पालन स्वयं अनुशासित होकर करें तभी सामाजिक व्यवस्था चल सकती

है। जैसे बायें से चलना। सब मनमाना चलने लगे तो पल-पल पर दुर्घटना सम्भव है।

विनय- 'सदाचार पूर्वक' से क्या आशय है?

प्रकाश- उपधारा (घ) उपधारा (क) में प्रयुक्त सदाचार की परिचारिका इस प्रकार है-

1. सन्ध्या (ब्रह्मयज्ञ) 2. होम (देवयज्ञ) 3. पितृयज्ञ- जीवित माता-पिता का श्राद्ध और तर्पण 4. अतिथि यज्ञ (सत्योपनिष्टा भ्रमणशील विद्वान की सेवा-सत्कार) 5. बलि वैश्य देव यज्ञ (अग्रासन देकर आश्रितों एवं छोटे-छोटे जीवों का पालन) ये 5 नित्य कर्म, शुद्ध-वृत्ति (सेवा व्यवसाय में धनार्जन में पवित्रता), वैदिक 16 संस्कार पतिव्रत व पातिव्रत आदि सदाचार का पालन व्यभिचार (पर-स्त्री पर-पुरुष गमन), मद्य-शराब गांजा भांग बीड़ी सिगरेट आदि मादक द्रव्यों और मांस-मछली अण्डे आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, जुआ, चोरी, छल-कपट, रिश्वत आदि दुराचारों से पृथक रहना, उपनियम 5 'जो सभासद आर्य समाज के दस नियमों में यह स्पष्ट वर्णन है-

वर्णित उद्देश्यों अथवा वैधानिक (उपरोक्त नियमों के विरुद्ध आचरण और व्यवहार करेगा उसको आर्य समाज की अंतरंग सभा सभासदी अघोषित कर) स्थगित कर सकती है और साधारण सभा कार्य सभासदी से पृथक् कर सकती है।

विनय- आर्य समाज के विशेष मन्तव्य क्या हैं?

प्रकाश- विशेष मन्तव्य- 1. यह 16 संस्कारों पर बल देता है क्योंकि इनसे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होते हैं।

2. यह जाति से 'आशय' मनुष्य घोड़ा, गाय, वृक्षादि लेता है क्योंकि इनका प्रसव समान होता है। ये जन्म से मृत्यु तक एक जैसा बनी रहती है, एक रूप रहती है और ईश्वरकृत है।
3. यह वर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र मानता है गुण कर्म से मानता है और गुण कर्म बदलने से वर्ण बदल जाना भी मानता है।
4. यह मनुष्य जीवन के चार विभाग आश्रम व्यवस्था में मानता है।

5. यह वेद को स्वतः प्रमाण और वेद से इतर अन्य ग्रन्थों परतः प्रमाण मानता है अर्थात् जो वेदानुकूल है वह ठीक और जो वेद विरुद्ध हैं उसे गलत मानता है क्योंकि वेद ईश्वरकृत हैं। उसके लिए ग्रन्थ में भ्रम भ्रान्ति नहीं क्योंकि वह सर्वज्ञ और वह सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल है।
6. यह जीवात्मा को अनादि तत्व मानता है ईश्वर का अंश नहीं। यह स्वतन्त्र कर्त्ता अर्थात् कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्थानुसार परतन्त्र है। बुरे कर्म कर यह निकृष्ट योनियां में जाता है अच्छे कर्म कर अच्छी योनियों में सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त हो जहाँ स्वतन्त्र विचरता हुआ ईश्वरानन्द में निमग्न हो 31 मील, 10 खरब 40 अरब वर्ष पर्यन्त मोक्ष सुख भोगता है।
7. परतः भ्रमण ग्रन्थों में निम्न ग्रन्थ से मान्य हैं–

ऐतरेय, साम, शतपथ और गोपथ से चारों ब्राह्मण ग्रन्थ, ईश केनकठ मुन्त्रक माण्ड्क्य ऐतरीय तैत्तरीय, छान्दोग्य वृहदारण्यक प्रश्न, श्वेता पूवेतर ये 11 उपनिषद् न्याय वैशेषिक सांख्य, योग पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा क्रमशः गोतम, कणीद कपिल पतञ्जलि, जैमिनि और व्यास ऋषि कृत छः शास्त्र, मनु कृत मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण महाभारत (प्रक्षिप्त अंश को छोड़) ऐतिहासिक ग्रन्थ और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्यामित्रिनयादि ग्रन्थ और वेदानु सभी सिद्धान्त मान्यतायें।

***

प्रातः स्मरणीय स्वर्गीया (श्रीमती किशोरी देवी चोपड़ा)

का

जीवन परिचय

आप बहुत ही सौम्य, सरल उदार और धर्मपरायण महिला थीं। आपका जीवन संयमित और ईश समर्पित था। आपके शरीर में जब तक शक्ति रही नित्य नियम से पूजा-पाठ ईश्वराधन और अपने कर्तव्य-पालन में रत रहीं। नियमानुवर्तिता, धर्मानुरक्ति और ईश्वर-भक्ति आपके ये आदर्श सबके लिए अनुकरणीय एवं वंदनीय हैं।

आपका जन्म लखीमपुर (खीरी) के एक प्रतिग्ठित खत्री परिवार में हुआ था आपके अन्दर धार्मिक संस्कार कूट-कूट कर भरे थे। आपका विवाह इलाहाबाद में एक प्रतिष्ठित खत्री परिवार (चोपड़ा) स्व0 गोपाल दास चोपड़ा जो अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। के परिवार में उनके पुत्र पुरुषोत्तम दास चोपड़ा के साथ सम्पन्न हुआ। आपके पति काफी धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। पूजा-पाठ करना उनका नित्य का कार्य था। उनकी ही छवि माता जी के अन्दर कूट-कूट कर भरी थी। उनके पति का देहान्त सन् 1985 में हो गया। तब से अपना सारा जीवन भगवान के ध्यान में ही समर्पित कर दिया। माता जी के चार पुत्र तीन पुत्रियाँ थीं। चारों पुत्र अपने-अपने व्यवसाय में लगे हुए हैं। माता जी के पति पुलिस मुख्यालय में एस0आई0 (एम0) के पद पर कार्यरत थे। इन्होंने अपना सारा जीवन सादगी के साथ व्यतीत कर सेवा निवृत्त हुए और 5 सितम्बर 1985 को दिवंगत हुए। अपने पुत्रों और पुत्रियों में सुसंस्कार डालने के लिए वे सदैव सचेष्ट रहीं। ऐसी धर्मपरायण महिला के 16 अगस्त 2002 को असामयिक निधन से आत्मीयजन के साथ सम्पर्क में आये लोग अत्यन्त दुखी हुए। उनका सबके साथ सद्व्यवहार, त्याग तपस्या भाव चिरस्मरणीय रहेगा। माता जी के हृदय में भक्ति के प्रति जो असीम अनुराग था उसको ही लक्ष्य कर 'दिव्य आर्य पथ-पदर्शिका' पुस्तक का प्रणयन-प्रकाशन किया गया है जिसके लिए समस्त चोपड़ा परिवार साधुवाद के पात्र हैं। आशा है, यज्ञ प्रेमी जन इससे स्वयं लाभ उठाने के साथ माता जी की पुनीत भावनानुसार जन जन तक इनका प्रचार प्रसार कर पुण्य के भागी बनेंगे।

विनयावनत

मदन मोहन दिव्य, धर्मभूषण

मुद्रक : चावड़ा प्रिंटिंग प्रेस (गोल पार्क) इलाहाबाद (यू0पी0)